विद्या भारती, झारखण्ड

जनजातीय शिक्षा हेतु समर्पण

मान्यवर/मान्या,

अभिभावक बन्धु-भगिनी,

सादर नमस्कार!

'सिंधु स्रोत से हिन्दू सिन्धु तक, रहते आए रहते हैं,
इस धरती को माँ कहते जो, हिन्दू उनको कहते हैं।'

प्राचीन समय में भारत विश्व गुरु था। सभी दृष्टि से अपने देश की गिनती विकसित देशों में होती थी। अपनी कमजोरी के कारण हम गुलाम हुए। पुनः भारत विश्व का नेतृत्व करने की दिशा में अग्रसर है। **'तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहे न रहे'** इस भाव भावना के साथ विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के मार्ग-दर्शन में राज्य के अंदर विद्या विकास समिति, झारखण्ड; वनांचल शिक्षा समिति एवं जनजातीय शिक्षा समिति शिक्षा के क्षेत्र में समाज सेवा का काम कर रही है। भारतीय चिंतन परंपरा में **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** की कामना करते हैं। हमसब का प्रयास है भारत माता को सर्वांग सुंदर बनाने का और यह कार्य शिक्षित समाज द्वारा ही संभव है। आज भी अपने देश का एक बड़ा वर्ग एवं क्षेत्र शिक्षा-साक्षरता रूपी दीपक के प्रकाश से वंचित है। हमसब के लिए यह चिंता और चुनौती का विषय है।

हमारा मानना है कि -

'पथ का अन्तिम लक्ष्य नहीं है सिंहासन चढ़ते जाना,
सभी समाज को लिए साथ में आगे है बढ़ते जाना।'

अतएव आपसब से सादर आग्रह है कि **'चलो जलाएँ दीप वहाँ जहाँ अभी भी अंधेरा है'**, पवित्र भाव से हमारे प्रयास को संबल प्रदान कर उत्साहित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। विद्या भारती सभी समाज को शिक्षित और साक्षर करने हेतु नगरीय क्षेत्र में सरस्वती संस्कार केन्द्र और ग्रामीण तथा जनजातीय क्षेत्र में सरस्वती शिक्षा केन्द्र एवं कुछ आवासीय विद्यालय का संचालन निःशुल्क करती है। हमारा मानना है कि समाज का एक-एक व्यक्ति शिक्षित और साक्षर होगा तो स्वावलंबी और समृद्ध होगा। शिक्षित समाज द्वारा ही विकसित भारत की कल्पना को साकार किया जा सकेगा। संपूर्ण समाज को शिक्षित और स्वावलंबी बनाने का कार्य चुनौतीपूर्ण और कठिन सा है, किन्तु श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण है।

श्रेष्ठ भारत के निर्माण में हम सब को भी अपना श्रेष्ठ देना होगा। विद्या भारती का प्रयास है कि समाज के एक-एक व्यक्ति के सहयोग से गिरिकंदराओं, झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले अपने बन्धुओं को साक्षर, शिक्षित, स्वावलंबी और संस्कारित कर मुख्यधारा से जोड़कर देश के उत्थान में सहयोग लिया जाए।

इस मद में अभी तक हो रहा वार्षिक व्यय विवरण -

सरस्वती शिक्षा केन्द्र (600)	-	600 x ₹1000 x 10 = ₹60,00,000.00
जनजातीय विद्यालय (13)	-	₹10,00,000.00
जनजातीय छात्रावास (4)	-	₹20,00,000.00
प्रवासी कार्यकर्ताओं का मानधन	-	₹25,00,000.00
प्रवासी कार्यकर्ताओं का मार्गव्यय एवं वाहन	-	₹10,00,000.00
प्रशिक्षण, सामग्री, प्रचार-प्रसार	-	₹15,00,000.00
योग	-	₹1,40,00,000.00

विद्या भारती के विद्यालयों में भैया-बहनों, अभिभावकों और शुभचिंतकों में राष्ट्रीयता का भाव जागरण हेतु विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम होते हैं। **'सेवा है यज्ञकुंड समिधा सम हम जलें'** यह भारतीय समाज की परंपरा है। हमारे लिए समाज बोध और राष्ट्र बोध को प्रकट करने एवं उत्तरदायित्व को निवर्हन करने का अवसर है। जब हमसब जनजातीय शिक्षा हेतु समर्पण - मकर संक्रांति से सरस्वती पूजा (15 जनवरी से 14 फरवरी 2024 तक) के मध्य अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान कर सकते हैं। इस कार्य हेतु प्रत्येक काक्षाचार्यजी प्रत्येक भैया-बहन से पत्रक द्वारा न्यूनतम दस लोगों से सहयोग करने की योजना बनावें। हमारा आग्रह है कि प्रत्येक परिवार से न्यूनतम ₹100/- का सहयोग प्रदान कर शिक्षित भारत, स्वावलंबी भारत, स्वस्थ भारत, स्वच्छ भारत और समृद्ध भारत को श्रेष्ठ भारत बनाने में अपना समर्थन दें। आपका सहयोग ही हमारा संबल है।

ईश्वर की कृपा सदैव आप पर बनी रहे।

.....

।। चलो जलाएँ दीप वहाँ, जहाँ अभी भी अंधेरा है ।।

जनजातीय शिक्षा हेतु समर्पण

दिनांक 15/01/2024 से 14/02/2024 तक

विद्यालय का नाम .....

संग्रहकर्ता का नाम ..... कक्षा ..... खंड .....

क्रम	सहयोगकर्ता का नाम	दूरभाष	राशि	हस्ताक्षर	दिनांक
योग					

ह० प्रधानाचार्य कक्षाचार्य संग्रहकर्ता